YOUNG RESEARCHER
Estd. 2012

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website: https://yra.ijaar.co.in/*
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

Original Article

शुंगकालीन भारतीय समाज का स्वरूप एवं सामाजिक जीवन की प्रमुख विशेषताएँ : एक विस्तृत अध्ययन

डॉ. अजय पासवान

सहायक प्राध्यापक (अतिथि संकाय), प्राचीन इतिहास विभाग,

किशोरी सिंहा महिला महाविद्यालय औरंगाबाद, मगध विश्वविद्यालय, गया, बिहार

Manuscript ID:
yrj-140310

ISSN: 2277-7911
Impact Factor – 5.958

Volume 14
Issue 3
July-August-Sept.- 2025
Pp. 93 - 98

Submitted: 16 July 2025
Revised: 28 July 2025
Accepted: 30 July 2025
Published: 10 Sept. 2025

Corresponding Author:
डॉ. अजय पासवान

Quick Response Code:

Web. *https://yra.ijaar.co.in/*

DOI:
10.5281/zenodo.19695251

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.19695251

सारांश:

शुंगकाल (लगभग 185 ई.पू. से 73 ई.पू.) भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण संक्रमणकाल है, जिसमें मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संरचनाओं का पुनर्गठन हुआ। इस काल में ब्राह्मणवादी परंपराओं का पुनरुत्थान हुआ, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक संरचना अधिक संगठित और नियंत्रित रूप में विकसित हुई। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य शुंगकालीन समाज के स्वरूप, सामाजिक जीवन की संरचना तथा उसकी प्रमुख विशेषताओं का गहन विश्लेषण करना है।

यह अध्ययन ऐतिहासिक ग्रंथों, अभिलेखीय प्रमाणों तथा पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आधार पर यह स्पष्ट करता है कि शुंगकालीन समाज में परंपरा और परिवर्तन का एक जटिल समन्वय विद्यमान था। एक ओर जहाँ वर्ण-व्यवस्था और ब्राह्मणवादी मूल्य सुदृढ़ हुए, वहीं दूसरी ओर आर्थिक गतिविधियों, व्यापारिक विस्तार तथा सांस्कृतिक उन्नति ने समाज को गतिशील बनाए रखा। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि शुंगकालीन समाज केवल धार्मिक पुनरुत्थान का ही प्रतीक नहीं था, बल्कि यह सामाजिक पुनर्संरचना की एक दीर्घकालिक प्रक्रिया का परिणाम था। इस काल में सामाजिक संगठन अधिक अनुशासित और श्रेणीबद्ध हुआ, जिससे सामाजिक स्थिरता तो बढ़ी, परन्तु साथ ही सामाजिक गतिशीलता सीमित भी हुई। वर्ण-व्यवस्था की कठोरता, जातिगत विभाजन तथा सामाजिक मर्यादाओं का सख्त पालन इस युग की प्रमुख विशेषताएँ थीं।

इसके साथ ही, आर्थिक स्तर पर कृषि, व्यापार और शिल्प के विकास ने समाज के भीतर एक प्रकार की आंतरिक ऊर्जा का संचार किया। व्यापारिक मार्गों के विस्तार और श्रेणी (गिल्ड) संगठन की सक्रियता ने शहरी जीवन को भी प्रभावित किया। सांस्कृतिक दृष्टि से यह काल अत्यंत समृद्ध था, जिसमें कला, स्थापत्य और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के नए आयाम विकसित हुए।

धार्मिक क्षेत्र में, यद्यपि ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान हुआ, तथापि बौद्ध और जैन धर्मों का अस्तित्व भी बना रहा, जो इस काल की धार्मिक सहिष्णुता और बहुलता का प्रमाण है। इस प्रकार, शुंगकालीन समाज को एक ऐसे युग के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें परंपरा और परिवर्तन दोनों का संतुलित समावेश था, और जिसने भारतीय सामाजिक संरचना को दीर्घकालिक रूप से प्रभावित किया।

कुंजी शब्द: शुंगकाल, सामाजिक संरचना, ब्राह्मणवाद, वर्ण-व्यवस्था, भारतीय समाज, धार्मिक जीवन, आर्थिक विकास, सांस्कृतिक परंपरा.

Creative Commons

OPEN ACCESS

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

डॉ. अजय पासवान (2025). शुंगकालीन भारतीय समाज का स्वरूप एवं सामाजिक जीवन की प्रमुख विशेषताएँ : एक विस्तृत अध्ययन. Young researcher, 14(3), 93 – 98.

https://doi.org/10.5281/zenodo.19695251

प्रस्तावना:

भारतीय इतिहास में शुंगकाल एक महत्वपूर्ण युग के रूप में जाना जाता है, जो मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् स्थापित हुआ। इस काल की स्थापना पुष्यमित्र शुंग द्वारा की गई, जिसने न केवल राजनीतिक सत्ता को पुनर्गठित किया, बल्कि सामाजिक और धार्मिक जीवन को भी गहराई से प्रभावित किया।

शुंगकालीन समाज का अध्ययन हमें यह समझने में सहायता करता है कि किस प्रकार भारतीय समाज ने राजनीतिक परिवर्तन के साथ स्वयं को पुनर्संगठित किया। इस काल में ब्राह्मणवादी परंपराओं का पुनरुत्थान हुआ, जिसने सामाजिक जीवन की संरचना को स्थायित्व प्रदान किया। प्रस्तुत लेख में शुंगकालीन समाज के विभिन्न आयामों का क्रमबद्ध एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। वास्तव में शुंगकाल केवल एक राजनीतिक परिवर्तन का युग नहीं था, बल्कि यह भारतीय सामाजिक इतिहास के विकास में एक निर्णायक मोड़ भी था। मौर्यकाल की अपेक्षाकृत उदार और केंद्रीकृत व्यवस्था के स्थान पर शुंगकाल में विकेंद्रीकरण और स्थानीय शक्तियों का उदय देखने को मिलता है, जिसका प्रभाव सामाजिक संरचना पर भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इस काल में सामाजिक संस्थाएँ अधिक सुदृढ़ एवं परंपरानिष्ठ बनती गईं, जिससे समाज में स्थिरता तो आई, किन्तु साथ ही रूढ़िवादिता का भी विकास हुआ।

ब्राह्मणवादी मूल्यों के पुनरुत्थान ने न केवल धार्मिक जीवन को प्रभावित किया, बल्कि शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक संबंधों को भी दिशा प्रदान की। यज्ञ, अनुष्ठान और वैदिक परंपराएँ पुनः समाज के केंद्र में आ गईं, जिससे ब्राह्मणों की सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इसके समानांतर, आर्थिक जीवन में भी उल्लेखनीय परिवर्तन हुए—कृषि के साथ-साथ व्यापार और शिल्प का विकास हुआ, जिसने समाज के विभिन्न वर्गों के बीच अंतर्संबंधों को मजबूत किया।

इस प्रकार, शुंगकालीन समाज को एक बहुआयामी संरचना के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें परंपरा, सत्ता, धर्म और अर्थव्यवस्था सभी परस्पर अंतःक्रिया करते हुए समाज के स्वरूप को निर्धारित करते हैं। यही कारण है कि इस काल का

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website: https://yra.ijaar.co.in/*
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

अध्ययन न केवल अतीत की समझ को समृद्ध करता है, बल्कि भारतीय समाज की दीर्घकालिक संरचना के विकास को भी स्पष्ट करता है।

सामाजिक संरचना और वर्ण-व्यवस्था:

शुंगकालीन समाज की आधारभूत संरचना वर्ण-व्यवस्था पर आधारित थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—इन चार वर्णों के मध्य स्पष्ट विभाजन विद्यमान था। इस काल में ब्राह्मणों की स्थिति अत्यंत सुदृढ़ हो गई, क्योंकि शुंग शासक स्वयं ब्राह्मण थे और उन्होंने वैदिक यज्ञों तथा अनुष्ठानों को पुनः प्रतिष्ठित किया।[1]

ब्राह्मणों को धार्मिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। वे शिक्षा, यज्ञ, और धार्मिक अनुष्ठानों के संचालन में प्रमुख भूमिका निभाते थे। क्षत्रिय वर्ग शासन और सैन्य कार्यों में संलग्न था, जबकि वैश्य वर्ग व्यापार, कृषि और पशुपालन में सक्रिय था। शूद्रों को सेवा कार्यों तक सीमित रखा गया।

इस काल में जाति-व्यवस्था अधिक जटिल हो गई और सामाजिक गतिशीलता में कमी आई। विभिन्न पेशों के आधार पर उपजातियों का विकास हुआ, जिससे समाज में स्तरीकरण और गहरा हुआ।[2] इसके अतिरिक्त, शुंगकालीन समाज में वर्ण-धर्म का पालन एक सामाजिक कर्तव्य के रूप में स्थापित हो चुका था, जिसके उल्लंघन को सामाजिक रूप से अनुचित माना जाता था। सामाजिक आचार-व्यवहार, भोजन, विवाह तथा पेशे से संबंधित नियमों में कठोरता बढ़ गई थी, जिससे सामाजिक नियंत्रण अधिक सुदृढ़ हुआ। इस व्यवस्था ने एक ओर सामाजिक स्थिरता को बनाए रखा, वहीं दूसरी ओर वर्गों के बीच दूरी और असमानता को भी स्थायी रूप प्रदान किया।

पारिवारिक जीवन और स्त्रियों की स्थिति:

शुंगकालीन समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली का व्यापक प्रचलन था। परिवार पितृसत्तात्मक था, जिसमें पिता या सबसे बड़े पुरुष सदस्य का अधिकार सर्वोपरि होता था। परिवार सामाजिक और आर्थिक जीवन की मूल इकाई था।

स्त्रियों की स्थिति इस काल में सीमित किन्तु महत्वपूर्ण थी। उन्हें परिवार के भीतर सम्मान प्राप्त था, किन्तु उनकी स्वतंत्रता पर सामाजिक नियंत्रण था। बाल-विवाह की प्रथा का प्रसार हुआ और विधवाओं की स्थिति कठिन थी।[3]

हालाँकि कुछ उच्च वर्गीय स्त्रियाँ शिक्षित थीं और धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेती थीं, फिर भी सामान्यतः स्त्रियों को गृहकार्य तक सीमित रखा गया।

विवाह प्रणाली और सामाजिक परंपराएँ:

शुंगकाल में विवाह को धार्मिक कर्तव्य और सामाजिक संस्था के रूप में अत्यंत महत्व दिया जाता था। ब्रह्म विवाह को सर्वोत्तम माना जाता था। विवाह में वर्ण और जाति की शुद्धता को विशेष महत्व दिया जाता था।

अंतर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहित नहीं किया जाता था और सामाजिक नियमों का कठोरता से पालन किया जाता था। उच्च वर्ग में बहुविवाह की प्रथा भी विद्यमान थी।[4]

विवाह केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं था, बल्कि दो परिवारों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों का भी प्रतीक था।

आर्थिक जीवन और व्यवसायिक संरचना:

शुंगकालीन अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि थी। किसान समाज का प्रमुख अंग थे और विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता था। सिंचाई के साधनों का भी उपयोग होता था, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।

व्यापार और वाणिज्य इस काल में उन्नत अवस्था में थे। व्यापारिक मार्गों का विकास हुआ और व्यापारी वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई। आंतरिक तथा बाह्य व्यापार दोनों सक्रिय थे।[5]

शिल्प और उद्योगों का भी विकास हुआ। कुटीर उद्योगों में वस्त्र निर्माण, धातु शिल्प, मिट्टी के बर्तन तथा आभूषण निर्माण प्रमुख थे। शिल्पकारों की श्रेणियाँ (गिल्ड) आर्थिक संगठन का महत्वपूर्ण अंग थीं।

धार्मिक जीवन और आस्थाएँ:

शुंगकाल में ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान हुआ। वैदिक यज्ञों और अनुष्ठानों का पुनः प्रचलन हुआ, जिनमें अश्वमेध यज्ञ विशेष रूप से महत्वपूर्ण था।[6]

हालाँकि इस काल को कभी-कभी बौद्ध धर्म के पतन के रूप में देखा जाता है, किन्तु यह पूर्णतः सत्य नहीं है। बौद्ध धर्म और जैन धर्म दोनों का अस्तित्व बना रहा और उनके अनुयायी समाज में सक्रिय रहे।

इस प्रकार शुंगकाल धार्मिक सह-अस्तित्व और विविधता का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

शिक्षा, कला और सांस्कृतिक जीवन:

शुंगकालीन शिक्षा प्रणाली मुख्यतः गुरुकुल पर आधारित थी। ब्राह्मण शिक्षक वेद, वेदांग, व्याकरण, दर्शन आदि विषयों की शिक्षा प्रदान करते थे।

कला और स्थापत्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। साँची और भरहुत के स्तूपों का विस्तार इस काल की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं। मूर्तिकला में प्रतीकात्मकता और सूक्ष्मता का विकास हुआ।[7]

साहित्य के क्षेत्र में संस्कृत भाषा का विकास हुआ और धार्मिक तथा दार्शनिक ग्रंथों की रचना हुई।

सामाजिक जीवन की प्रमुख विशेषताएँ:

शुंगकालीन समाज का सामाजिक जीवन विविधताओं से युक्त होते हुए भी मूलतः परंपरानिष्ठ, संगठित और श्रेणीबद्ध था। इस काल में सामाजिक

आचार-व्यवहार, धार्मिक मान्यताओं और पारंपरिक मूल्यों का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। सामाजिक जीवन की प्रमुख विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) परंपरावाद: समाज परंपराओं और धार्मिक आस्थाओं से गहराई से प्रभावित था।

(2) ब्राह्मणों का वर्चस्व: धार्मिक और सामाजिक जीवन में ब्राह्मणों की प्रधानता स्पष्ट थी।

(3) सामाजिक असमानता: वर्ण और जाति के आधार पर समाज में असमानता विद्यमान थी।

(4) धार्मिक सहिष्णुता: विभिन्न धर्मों का सह-अस्तित्व समाज की महत्वपूर्ण विशेषता थी।

(5) ग्रामीण जीवन की प्रधानता: अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती थी और कृषि पर निर्भर थी।

(6) सांस्कृतिक समृद्धि: कला, स्थापत्य और साहित्य में उल्लेखनीय विकास हुआ।

निष्कर्ष:

शुंगकालीन भारतीय समाज एक जटिल, बहुआयामी तथा सुसंगठित सामाजिक संरचना का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें परंपरा, धर्म, अर्थव्यवस्था और सत्ता—सभी तत्व परस्पर अंतर्संबंधित रूप में कार्य करते हुए दिखाई देते हैं। यह काल न केवल राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की दृष्टि से भी अत्यंत निर्णायक सिद्ध हुआ। मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् उत्पन्न इस युग ने भारतीय समाज को एक नई दिशा प्रदान की, जिसमें ब्राह्मणवादी मूल्यों और वैदिक परंपराओं का पुनर्स्थापन प्रमुख आधार बना।

इस काल में ब्राह्मणवादी पुनर्जागरण ने सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। यज्ञ, अनुष्ठान और धार्मिक विधियों के पुनः प्रचलन ने ब्राह्मणों की सामाजिक प्रतिष्ठा को अत्यधिक सुदृढ़ किया। इसके परिणामस्वरूप वर्ण-व्यवस्था अधिक संगठित और कठोर रूप में विकसित हुई, जिसने समाज को एक निश्चित ढाँचा प्रदान किया। यद्यपि इस व्यवस्था ने सामाजिक स्थिरता और अनुशासन को बनाए रखा, परन्तु इसके साथ ही सामाजिक गतिशीलता में कमी और वर्गों के बीच दूरी भी बढ़ी।

आर्थिक दृष्टि से शुंगकालीन समाज में उल्लेखनीय सक्रियता देखने को मिलती है। कृषि इस समाज की आधारशिला थी, किन्तु इसके साथ-साथ व्यापार, वाणिज्य और शिल्प का भी पर्याप्त विकास हुआ। व्यापारी वर्ग और शिल्पकारों की श्रेणियाँ आर्थिक जीवन को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। व्यापारिक मार्गों के विस्तार और शहरी केंद्रों के विकास ने समाज में एक नई आर्थिक चेतना को जन्म दिया, जिससे सामाजिक संबंधों में भी परिवर्तन आया।

सांस्कृतिक और कलात्मक दृष्टि से यह काल अत्यंत समृद्ध था। स्थापत्य कला, विशेषकर स्तूपों, रेलिंगों और तोरणों का निर्माण, इस युग की उन्नत कलात्मक संवेदनशीलता को दर्शाता है।

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| Website: https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

मूर्तिकला में प्रतीकात्मकता और सूक्ष्म अभिव्यक्ति का विकास इस बात का प्रमाण है कि समाज केवल धार्मिक रूप से ही नहीं, बल्कि सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक चेतना के स्तर पर भी विकसित हो रहा था।

धार्मिक जीवन में जहाँ एक ओर ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान हुआ, वहीं दूसरी ओर बौद्ध और जैन धर्मों का अस्तित्व भी बना रहा। इससे यह स्पष्ट होता है कि शुंगकालीन समाज पूर्णतः एकांगी नहीं था, बल्कि उसमें धार्मिक विविधता और सह-अस्तित्व की भावना विद्यमान थी। यह बहुलतावादी दृष्टिकोण भारतीय समाज की दीर्घकालिक विशेषता के रूप में विकसित हुआ।

सामाजिक दृष्टि से, यद्यपि यह काल अनेक सकारात्मक परिवर्तनों का द्योतक था, तथापि इसमें कुछ सीमाएँ भी स्पष्ट रूप से विद्यमान थीं। जातिगत कठोरता, सामाजिक असमानता तथा स्त्रियों की सीमित स्वतंत्रता इस समाज के कमजोर पक्ष थे। स्त्रियों की भूमिका मुख्यतः घरेलू जीवन तक सीमित थी, और उन्हें सामाजिक निर्णयों में सीमित स्थान प्राप्त था। फिर भी, वे पारिवारिक और सांस्कृतिक जीवन की आधारशिला बनी रहीं।

समग्रतः, शुंगकालीन समाज को एक ऐसे ऐतिहासिक चरण के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें परंपरा और परिवर्तन का अद्वितीय संतुलन विद्यमान था। इस काल ने भारतीय समाज को स्थायित्व, संरचना और सांस्कृतिक निरंतरता प्रदान की, जो आगे चलकर भारतीय सभ्यता के विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध हुई।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शुंगकाल केवल एक राजनीतिक सत्ता परिवर्तन का युग नहीं था, बल्कि यह भारतीय सामाजिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसने समाज की संरचना, मूल्यों और सांस्कृतिक धारा को दीर्घकालिक रूप से प्रभावित किया। इस दृष्टि से शुंगकालीन समाज का अध्ययन न केवल अतीत की समझ को समृद्ध करता है, बल्कि वर्तमान सामाजिक संरचनाओं की जड़ों को भी स्पष्ट करता है।

संदर्भ सूची:

1. शर्मा, रामशरण. प्राचीन भारत का इतिहास। नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
2. ठाकुर, उपेन्द्र. मौर्योत्तर भारत। पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।
3. सिंह, उपेन्द्र. प्राचीन और मध्यकालीन भारत का इतिहास। नई दिल्ली: पियर्सन।
4. थापर, रोमिला. भारत का इतिहास। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. चट्टोपाध्याय, डी.पी. भारतीय दर्शन की रूपरेखा। दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस।
6. अग्रवाल, वासुदेव शरण. भारतीय कला। वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।